मदारपुर के छात्रों ने संभाली षुद्ध पानी की कमान !

मेघ पाईन अभियान और समाज के वंचित वर्ग के संयुक्त प्रयास से पानी के विसगतियों के सवाल पर लोगों को शुद्ध पानी मुहैया कराने की एवं अर्द्धसैनिक रूपी राक्ष को भगाने की चुनौति मदारपुर पंचायत के बुद्धिजीवियों, समाजसेवियों एवं छात्रों ने मिलकर स्वीकार की। परिणाम स्परूप समाज के लोगों ने अपने बुजुर्गो की दी गई मार्ग को अपनाते हुए उनकी राह पर चलकर शुद्ध पानी का रास्ता निकालते हुए वर्षो से बन्द पड़े, बेकार पड़े कुँए की सफाई कर समाज में एक मिषाल कायम कियां मेघ पाईन अभियान के विचार और समाज का सहयोग आनेवाले समय में सम्पूर्ण अर्द्धसैनिक प्रभावित क्षेत्र को नई दिषा प्रदान करेगी।

गाँव का संक्षिप्त परिचय :

बड़ी मदारपुर खगड़िया जिला– गोगरी प्रखण्ड अंतर्गत मदारपुर पंचायत का एक गाँव है। बड़ी मदारपुर, छोटी मदारपुर एवं गोविन्दपुर क्रमषः तीन गाँव के समिश्रण से बना यह पंचायत गंगा नदी से 8 कि0 मी0 एवं गंडक नदी से तीन कि0 मी0 की दूरी पर अवस्थित है। खगड़िया जिला मुंगेर जिला का एक हिस्सा हुआ करता था। इसके पूर्व खगड़िया अंतर्गत एक ही थाना हुआ करता था गोगरी थाना था। बाजार भी गोगरी ही था। गोगरी की अपनी एक संस्कृति भी हुआ करती थी। किवदन्ति के अनुसार मदारपुर में भगवान श्री कृश्ण का गढ़ हुआ करता था। बिहार के तमाम षहरों को जोड़ने वाली सड़क एन0 एच0 31 एवं सहरसा अगुवानी घाट भी इस गाँव की शोभा बढ़ाती है। 964 परिवारों का गाँव बड़ी मदारपुर विभिन्न जातियों के मिश्रण से बना है जो आज भी सबके दुख–सुख में अपने एकता का परिचय देता है। जिला मुख्यालय से 20 कि0 मी0 एवं प्रखण्ड मुख्यालय से 6 कि0 मी0 की दूरी पर यह गाँव अवस्थित है।

- उत्तर– रेलवे लाईन एवं एन0 एच0 31
- दक्षिण– राटन गाँव
- पूरब– प्रखण्ड मुख्यालय जाने वाली सड़क
- पष्चिम– रामचन्दपुर गाँव
- सामाजिक मानचित्रण
- जनसंख्या– 6000
- कुल घरों की संख्या– 964
- जातिय संरचना–
- पासवान– 300 घर
- मंडल– 200 घर
- पोद्दार– 150
- शर्मा (तांती) 80 घर
- बढ़ई– 80 घर
- तेली– 18 घर

- कानू (साह)– 23 घर
- हलुआई– 20 घर
- नाई (ठाकुर)– 25 घर
- कुम्हार– 30 घर
- मकिण्डे– 8 घर
- नुनियाँ– 3 घर
- अल्पसंख्यक (मुसलमान)– 5 घर
- रजक (धोबी)– 4 घर
- यादव– 3 घर
- रबिदास (राम)– 15 घर

संसाधन

- विद्यालय– 1
- भगवती स्थान– 1
- सामुदायिक बैठका– 1
- आँगनबाड़ी– 1
- कुआँ– 5
- गाँव में पक्की सड़क एवं ईट सोलिंग सड़क है।
- गाँव में बिजली की व्यवस्था है

चुनौति

★ समता ने वर्ष 2003 मे आसैनिक की स्थिति को एक चुनौति के रूप में स्वीकार करते हुए मदारपुर पंचायत में कार्य शुरू किया परन्तु असहयोगात्मक स्थिति के बावजूद भी समता ने हिम्मत नहीं हारी।

★ वर्ष 2006 में मेघ पाईन अभियान खगड़िया में आसैनिक पर कार्य करने की सोच बनाई और निर्णय लिया गया कि मदारपुर को नहीं छोड़ा जाय क्योंकि मदारपुर के लोगों को आसैनिक की स्पष्ट कोई जानकारी नहीं है।

कार्य पूर्व स्थिति

★ पी0 एच0 ई0 डी0 विभाग के द्वारा सरकारी चापाकल की जाँचें

★ आसैनिक युक्त चापाकल में लाल रंग से पेन्ट

★ आसैनिक मुक्त चापाकल में नीला रंग से पेन्ट

★ गोविन्दपुर स्थित विद्यालय में चापाकल में आसैनिक, लाल रंग से पेन्ट

★ लाल रंग से पेन्ट के बावजूद बच्चे एवं षिक्षक का पेयजल के रू‍प में चापाकल का प्रयोग

★ कार्य के दौरान

★ क्षेत्र मं आसैनिक के बारे में कोई समझ नहीं, न ही पानी में पाये जाने वाले अन्य तत्वों की जानकारी।

★ क्षेत्र में अध्ययन के दौरान 17 चर्म रोग से पीड़ित बड़ी मदारपुर में पाये गये जो निम्न है :–

क्रमांक	पीडित व्यक्ति का नाम	डम्र	रोग के प्रकार
1.	श्री धीरज पासवान	16	हाथ में 6 माह से घव पैर में 8 माह से घाव
2.	श्री संजय पासवान	23	पैर में 6 माह से घाव
3.	श्री सौरव कुमार	18	छाहिने पैर में 8 वर्षो से घाव
4.	गौरव पासवान	12	छाहिने पैर में घाव 8 माह से
5.	प्रद्युम्न पासवान	10	छोनों पैर में घाव 5 वर्षो से
6.	पुष्पम कुमार	8	छोनों पैर एवं कांख में घाव
7.	श्री प्रेम लाल	30	छाहिना हाथ में सालों भर घाव रहता है।
8.	कविता कुमारी	9	ब्चपन से सर के पीछे भाग में घाव है दवाई करने पर ठीक भी होता है पर फिर हो जाता है
9.	केदार कुमार	17	मुँह में घाव है
10.	मिथुन कुमार शर्मा	21	सर में घाव
11.	सपना कुमारी	2	सर में घाव
12.	अखिलेष शर्मा	3	कान में घाव
13.	वकील शर्मा	10	छोनों पैर में घाव

14.	गोढ़न ताँती	35	गाल में घाव है दवाई खाते हैं पर ठीक नहीं होता है।
15.	अनुष्ठक कुमारी		सर में घाव
16.	रेशमी कुमारी		सर में घाव
17.	श्री बंदुरन पासवान	70	पैर में घाव 10 वर्षो से

समस्या

★ ग्रामीणों का असहयोगात्मक रवैया

★ कुढ़ लोगों के द्वारा अफवाह फैलाई गई कि यह सब ठेकेदार है

★ मेघ पाईन अभियान के कार्यकर्त्ताओं के साथ सीधी बात चीत नहीं करना

★ ग्रामीणों द्वारा कुआँ सफाई कराने के बाद भी बार–बार कुआँ को गन्दा करना।

सोच में बदलाव

★ मेघ पाईन अभियान के सहयोगी के लागतार प्रयास के बाद गाँव के बुद्धिजीवियों के बीच पानी के विषय को लेकर चर्चा हुई कि ये लोग क्या कहते हैं ?

★ जल– जाँच, जल संवाद यात्रा, जल महोत्सव, बाल जल संवाद यात्रा, प्रभात फेरी, ग्रामीण बैठक, चर्म रोग के अध्ययन एवं छात्रों से प्रष्नोत्तर के फलस्वरूप शुद्ध जल के प्रति सोच विकसित हुई।

परिणाम :

★ शुद्ध और अषुद्ध जल के प्रति ग्रामीणों में जागरूकता बढ़ी

★ ग्रामीण पराम्परागत जल श्रोत कुआँ एवं वर्त्तमान जल श्रोत चापाकल के पानी में अन्तर समझने लगे।

★ जनता की ओर से प्रत्येक चापाकल एवं प्रत्येक जल श्रोत की जाँच की माँग होने लगी।

★ 7 लोगों के द्वारा प्रथम बार वर्षा का पानी इक्ट्ठा कर पीने का काम किया गयां

★ छात्र के द्वारा स्वयं के श्रमदान से कुएँ की सफाई की।